Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue No. VII, July-2012, ISSN 2230-7540

मुगलकालीन उत्तर भारतीय समाज में मनोरंजन, त्यौहार एवं शिक्षा

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

मुगलकालीन उत्तर भारतीय समाज में मनोरंजन, त्यौहार एवं शिक्षा

Ashok Kumar[1]* Dr. Sanjay Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of History, CMJ University, Shillong, Meghalaya

[2] Assistant Professor in History, Government College, Krishan Nagar, Haryana

***सार -** मनोरंजन सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधनों एवं समय समय पर मनाये जाने वाले त्यौहारों की दृष्टि से मुगलकाल को आनन्द व खुशी का काल कहा जा सकता है। इस काल के मनोरंजन के साधनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इनमें से अनेक युग की प्रवृत्तियों के अनुरूप अपने स्वरूप में सैनिक व साहसिक गुणों से प्रभावित लगते हैं। ऐसे मनोरंजनों में चैगान, घुड़दौड़, शिकार, पशु या पक्षियों की लड़ाई आदि प्रमुख है जिनका सम्बन्ध मुख्यतः अभिजात वर्ग से था। कुछ अन्य यथा चैपड़, ताश, कबूतर व पतंग उड़ाना, कुश्ती आदि का सम्बंध समाज के धनी, निर्धन सभी वर्गों से था। समाज में विशेषकर उच्च वर्ग में समृद्धि का प्राचुर्य वैभव विलास, विभिन्न प्रकार के मनोरंजन और क्रियाएं विद्यमान थी। सम्पन्न वर्गों में शान-शौकत की अधिकता थी और उसी के अनुरूप अनेक मनोरंजन के साधनों का प्रचलन हो गया था। इस तरह सभी सुख सुविधाओं से युक्त प्रासादों में दास-दासियाँ सदैव सेवा के लिए तत्पर रहती थी। मनोविनोद के लिए नट-नर्तक क्रीड़ाएं, विहार और विभिन्न रंगस्थलियों की कमी नहीं थी। केशव ने वीरसिंहदेव चरित में दिल्ली के सुल्तान के विनोद के साधनों का वर्णन दिया है प्रायः यह सामग्री सुल्तान से लेकर छोटे सरदार, सामन्त, रईस सभी को सुलभ थी।*

---------------------------------X--------------------------------

इन साधनों में हाथी घोड़े, मणी, गुणी, गायक, सुन्दरी, कलावन्त, आदि की गणना की गई है।

जहांगीर जगती को इन्द्र, देख्यों विरसिंह देव नरिंद।

कर जोरे सेवत, दिगपाल। विद्याधर, गंधर्व रसाल।।

सोभत है गजराज चरित्र। ढारत चँवर कलानिधि मित्र।

सकल मंजुघोषा सुन्दरी, गावति सुखद सुकेशी खरी।।[1]

मनोरंजन के साधन

मनोरंजन के इन साधनों में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। केशव के वर्णन से स्पष्ट होता है कि दुःख व निराशा से मुक्ति हेतु वीणा वादन मनोरंजन का एक साधन था।

जब-जब धरि बीना प्रकट प्रबीना बहु गुनलीना सुख सीता।

पिय जियंहि रिझावै दुखनि भजावै बिबिध बजावै गुनगीता।[2]

संगीत के लिए तरह-तरह के वाद्य-यन्त्रों का उपयोग किया जाता था जिनमें, मृदंग, ढोल, झांझ, डफ और बीन आदि होते थे।

एक नृत्यत एक गावत मिलि परस्पर बोल।

जब हौं सुन्यों झिंझ, डफ बाजत बीना ताल मृदंग।

X X X X

रति ताल मदन मृदंग बाजत दुन्द दुंदुभि ढोल।[3]

कवि बनारसी दास ने आगरे के एक साहूकार द्वारा जो बहुत धनी था उसके घर पर गायकों द्वारा पखावज (मृदंग एक तरह का ढोलक के आकार का उपकरण) एवं वीणा बजाने का उल्लेख किया गया है।

[1] केशव, वीरचरित्र, 11वां प्रभाग, चैपाई 24-25, पृ0 522

[2] केशव, रामचन्द्रिका, 11वां प्रभाग, दोहा 27, पृ0 182

[3] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली,भाग-दो, दोहा 182, 178, पृ0 1075-1072

बैठे साहू विभो मंदमति। गांवहि गीत कलावंत पांति।

धुरै पखावज बाजैं तांति। सभा साहिबजादे की भांति।[4]

इस तरह संगीत राजघरानों में आमोद-प्रमोद के महत्वपूर्ण साधन था। औरंगजेब ने इस पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया। उसके बाद भी संगीत निरन्तर जारी रहा विलासी अमीर उमरा अपने हरम में बड़ी संख्या में नर्तकियां रखते थे और संगीत समारोंहों का आयोजन करते थे।[5] पदमाकर की नायिका चित्रशाला और नाट्यशाला, छज्जों, झरोकों में मनोरंजन करती थी।

छज्जा छज्जा झांकती झरोखनि झरोखनि ह्नै चित्रसारी चित्रसारी चंद सम वै रही

X X X X

आवत कंत उछाह भरे अवलोकिबै कौ निज नाटकशाला।

हौं नचि गाई रिझावहुगीं पदमाकर त्यों रूचि रूप रसाला।[6]

इसके साथ-साथ कुछ आयोजित मनोरंजन जिनमें नट, बाजीगरों के तमाशों, बन्दर का नाच और सपेरों के खेल आदि होते थे। इन तमाशों के साथ सारंगी, ढोल, तबला, मंजीरा आदि बजते रहते थे।

नटवट रच्यौ नटवै एक, बहु प्रकार बनाए बाजी कियो रूप अनेक

X X X X

के कै कला अनेक नटवा चढ़ि बांस फैला खतरातन तोड़त

ढोलियां यों कहै हों न बदों इत आपु दिवैयन के कनफोरत[7]

सुन्दरदास व्यक्ति के कामिनि (वासना का रूप) के प्रभाव में होने की उपमा ऐसे बन्दर से करता है जिसे मदारी नचाता है और सपेरा सांप को पिटारे से बाहर निकालता है।

जब सर्प सुन्यौ बहु नादा कहै श्रवनहु पायौ स्वादा।

जब बहुर लगी खेला तब पकड़ पिटारी मेला

X X X X

जीवन माहि कामरस लुबधि, कामिनि हाथ बिकायो रे।

जैसे बाजीगर को बनरा, घर-घर नाच नचायौ रे।।[8]

घर से बाहर खेले जाने वाले खेलों में चैगान अभिजात वर्ग का खेल था। केशव ने राम के चैगान खेल का वर्णन किया है यह खेल आज के पोलों की भांति खेला जाता था जिसकी परिधि एक कोस तथा भूमि सममतल होती थी। रामचन्द्र जब चैगान खेलने के लिए जाते थे उनके साथ-साथ नौकर, प्यादे और अन्य लोग भी होते थे।

एक काल आतिरूप विधान, खेलन को निकले चैगान।

हाथ धनुष सर मन्मथ रूप। संग प्यादे सोदर भूप।

याहि विधि गए राम चैगान। सावकास सब भूमि समान,

सोभन एक कोस परिमान, रूचि रूचिर तापर चैगान।।

X X X X

खेलन को लागे कुंवर सब चतुर चारू चैगान।।[9]

सुन्दरदास ने कर्मों के वश धक्के खाते व्यक्ति की तुलना आखिर रहने वाले चैगान की गंेद (कदुंक) से की है और बिहारी ने प्रेम का रूपक चैगान के साथ बांधा है। चित रूपी घोड़े के साथ प्रेम रूप चैगान के खेल को जीतना चाहिए।

थिरता न लहै जैसें कदुंक चैगान माहि।

कर्मनि के बसि मारयौ को धक्का बहुत है।।

X X X X

सरस सुमिल चित तुरगँ की करि करि अमिट उठान।

गोई निवाहै खेलि प्रेम चैगान।[10]

---

[4] बनारसीदास, अर्धकथानक, चैपाई, 558, 59, पृ0 62

[5] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, 1658-1719, पृ0 41, अली मुहम्मद खान, मीराते अहमदी, अंग्रेजी अनुवाद, एम॰एफ॰ लोखण्डवाला, पृ0 71, मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, पृ0 102

[6] पदमाकर, जगदविनोद, दोहा 567, 268, पृ0 77, 38

[7] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली, भाग-2, पृ0 1052, वोधा, विरहवारीश, दोहा 49, पृ0 111

[8] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली, भाग 1 पृ0 144, वही भाग-2, पृ0 1063, दोहा 21, 161, 12, 14 पृ0 131, 1063, 144, बर्नियर ने उल्लेख दिया है कि बाजीगर कई तरह से लोगों का मनोरंजन करते थे, देखिए फ्रैंक्विस बर्नियर, ट्रैवल्स इन द मुगल इम्पायर, पृ0 109, पी.एन. चोपड़ा, सम आसपैक्ट आफ सोशल लाइफ डयूरिंग द मुगल ऐज 1526-1707, पृ0 77

[9] केशव, रामचन्द्रिका, 29वां प्रभाग, छन्द 14, पृ0 371, वही, विरचरित्र, 19 वां प्रभाग, दोहा 9, पृ0 559, पोलो व चैगान के लिए देखिए, मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, पृ0 102

[10] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली, भाग-2,, पृ0 786, बिहारी, बिहारीरत्नाकर, दोहा 178, पृ0 90

सर्वसाधारण में पतंग उड़ाने का प्रचलन था। प्रमी जहां मनोरंजन के लिए पतंग उड़ाया करते थे वहीं प्रेमिकाएं इसे देखकर मनोरंजन करती थी।

उड़ति गुडी लखि लाल की अंगना अंगना मांह।

बौरी लौं दोड़ी फिरती छुवति छबिलि छाँह।।

X X X X

कहा भयो जो बिछुरे तो मन मो मन साथ।

उडि जाति कित हुँ गुडी तऊ उडायक हाथ।।[11]

मुगल काल में सम्राट और उच्च वर्गों के लोगों का शिकार मनोरंजन के लिए सबसे लोकप्रिय साधन था।[12] तत्कालीन काव्य में भी इसके संदर्भ मिलते हैं। केशव ने जुर्रा, बहरी, बाज तथा श्वान (कुत्ता) की सहायता से वानर, बाघ, वराह, मृग आदि पशुओं के साथ कपोत, तीतर, पिक, केकी, केक, कुररी, सिंह और शूकर (सूअर) के शिकार की चर्चा की है ।

जुररा बहरी, बाज बहु चीते, स्वान सयान।

सहर बहेलिया, मिलजुल नीज निचोल, विधान।।

बानर, बाघ, वराह, मृग, सीनादिन बहु जंत।

वध बंधन बेधन, बरनि मृगया खेल अनंत।।

तीतर, कपोत, पिक केकी कोक पारावत।

कूकर पास सक सूकर गहाए है।

मकर निकट, वेधि वांछि गजराज मृग।।[13]

बादशाह अकबर भी शेरों, चीतों, हाथियों, हिरणों, जगली गधों, मुर्गाबियों, कुत्तों के शिकार का बड़ा प्रेमी था। इस उद्देश्य के लिए उसने चारों तरफ से घिरी जगह जिसे 'कमरधा' कहा जाता था में बड़ी रूचि रखता था।[14] मनूची ने भैसों, हाथियों की मदद से शाहजहां द्वारा चीते के शिकार का ब्योरेवार वर्णन दिया है।[15] बर्नियर ने बड़े-बड़े सरदारों और कभी-कभी जन साधारण के साथ शेरों, तेंदुओं, हिरणों, नीलगायों, घूसर रंग के सांडों और अन्य जंगली जानवरों के शिकार में बादशाह की दिलचस्पी का वर्णन दिया है[16] इस खर्चीले मनोरंजन का उपयोग साधारतः सामान्य जन नहीं करते थे।

इसके अलावा घर में खेले जाने वाले खेलों में शतरंज, चैपड़, बिसात और जुआ आदि खेलों का भी प्रचलन था। स्त्रियाँ भी शतरंज के खेल द्वारा मनोरंजन करती थी।

खेजत ही शतरंज आलिनि में आपहिते।

तहां हरि आए कियौ काहू के बुलाय री।[17]

शतरंज के खेल की शुरूआत भारत से ही हुई मानी जाती है।[18]

चैसर या चैपड़ जिसमें पासे, हाथी दांत की सोलह गोटी, रंगीन विसात, गोट गिन कर चलने, हार जीत, गोट पिटने आदि के उल्लेख तत्कालीन साहित्य में मिलते हैं ।

चल चित बाजी हारियै जतन करै सौ लाखु।

सेनापति जब जितिये मन मुंह रामैं राखु।।[19]

X X X X

दोऊ जने मिलि चैपर खेलत सारि ढरै पुनि ढारत पासा

जीतत है सु सुखी मन में हारति है सु भरे उसासा।[20]

दरबारों में भी यह विशेष रूप से खेला जाता था। औरंगजेब की बेटी जेबुनिशा अपनी सहेलियों के साथ अधिकांश समय चैसर

---

[11] बिहारी, बिहारीरत्नाकर, दोहा, 373, 57, पृ0 153, 130

[12] जे.एन. सरकार, हिस्ट्री आॅफ औरंगजेब, भाग-3, दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 1972, पृ0 9

[13] केशव, कविप्रिया, 8 वां प्रभाग, पृ0 144, 45, पैल्सर्ट ने आगरे के समीप रूपवास में जहांगीर द्वारा सूअर, बाघ, शेर, मृग का शिकार का वर्णन दिया है। देखिए, पैल्सर्ट, जहांगीरज़ इण्डिया, पृ0 51-52

[14] कमरघा (चारों तरफ से घिरी जगह) जिसमें जन साधारण भी भाग लेते थे। देखिए, पी.एन.ओझा, मुगकालीन भारत का सामाजिक जीवन, पृ0 48, पी.एन. चोपड़ा, सम आसपैक्ट आफ सोशल लाइफ डयूरिंग द मुगल ऐज 1526-1707, पृ0 69

[15] मनूची, भाग 1, पृ0 191, 92

[16] फ्रेंक्विस बर्नियर, ट्रैवल्स इन द मुगल इम्पायर, पृ0 376, 77, 78

[17] केशव, कविप्रिया, 12वां प्रभाग, दोहा 30, पृ0 181, मायावती लिखती हैं कि शतरंज एक फारसी शब्द है, जो चैंसठ खानों की बिसात पर 32 मोहरों से खेला जाता था। देखिए, मायावती भण्डारी, उŸारी भारत में हिन्दू समाज 1658-1719, पृ0 39

[18] के.एम. अशरफ, हिन्दूस्तान के निवासियों का जीवन और परिस्थितियां, पृ0 241, अमीर खुसरो, नूहे सिपेहर,हिन्दी अनुवाद, एस.ए.ए. रिजवी,खलजी कालीन भारत, नई दिल्ली, 2008, पृ0 179

[19] सेनापति, कवितरत्नाकर,पूर्वोक्त, कवित 10, पृ0 121, उच्च वर्गों में चैपड़, पतंगबाजी, कबूतरबाजी के लिए देखिए, मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी,, पृ0 411

[20] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली, भाग-2, दोहा 30, पृ0 942

खेलने में व्यतीत करती थी।[21] जुआ भारतीय परम्परा में प्रचीन खेल माना जाता है। अकबर भी इसमें रूचि लेता था।[22]

पासा सारि खेलि कित कौन मनुहारिन सोंजित मन हारि हारि आए हों।[23]

पदमाकर ने भी जुआ खेलने की चर्चा की है लेकिन सन्त सुन्दरदास जुआ को एक बुराई के रूप में उल्लेख किया है।

जूवा जूवा मत बषासे जुई जुई माल

देखि सुन्दर भय चकित सब ठगे से लाल।[24]

महिलाएं भी जुआ खेलती थी जिसका उल्लेख केशव ने 'रसिकप्रिया' के माध्यम से दिया है।

आजु देवारि की राति जौ कीजै तो आजु के धोस लौ हनै है सभागी

दीप दै देवनि जाई जुवा मिलि 'केशवराई' सौ खेलन लागी।[25]

बड़ों के साथ-साथ बालकों के भी मनोंरंजन के साधन जैसे, फिरकी, गुल्ली डण्डा, गोली, ठिकरी छुपाना, बन्दर किला, कोडा चैपाकी प्रचलित थे।[26] सुन्दरदास और बिहारी ने बालकों के खेल जैसे लकड़ी का घोड़ा, फिरकी आदि का उल्लेख किया है।

ज्यौं लकड़ी के अश्व चढ़ कूदत डौले बाल।

X X X X

नई लगनि कुल की सकुच विकल भई अकुलाई

दुंह और ऐथी फिरति, फिरकि लौ दिन जाई।।[27]

कबूतरबाजी (इश्कबाजी) के नाम से जानी जाने वाली कबूतरों की उड़ान में सभी अमीर-गरीब दिलचस्पी लेते थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

एच. रिसले: द पीपल ऑफ़ इंडिया, कलकत्ता, 1975

एच.के. नकवी: अर्बन सैन्टर एण्ड इन्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया, 1556-1803, बम्बई, 1968

एस॰एम॰जाफर: सम कल्चरल आस्पैक्टस आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया, दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 1979

के॰ए॰ निजामी: स्टडीस इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, इलाहाबाद, 1956

के॰बी॰ जिन्दल: हिस्ट्री आफ हिन्दी लिटरेचर, इलाहाबाद, 1955

के॰पी॰ बहादुर: लव पोएम्ज आफ घनानन्द, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1977

...........................,: द रसिकप्रिया ऑफ़ केशवदास, दिल्ली, 1972

डब्ल्यू.एच. मोरलैण्ड: इण्डिया एट द डैथ आफ अकबर, दिल्ली, 1962

जान एफ रिचर्ड: द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया, द मुगल एम्पायर, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, पुर्नमुद्रित, 2000

Corresponding Author

Ashok Kumar*

Research Scholar, Department of History, CMJ University, Shillong, Meghalaya

[21] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज 1658-1719, पृ0 40

[22] जहांगीर, जहांगीरनामा, हिन्दी अनुवाद, ब्रजरत्नदास, पृ0 92

[23] पदमाकर, जगदविनोद, दोहा 169, पृ0 24

[24] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली, भाग-2, दोहा 158, पृ0 1062

[25] केशव, रसिकप्रिया, तेरहवां प्रभाग, दोहा 10, पृ0 77

[26] बी.एस. निज्जर, पंजाब अण्डर द लेटर मुगल्ज़ 1707-1759, पृ0 273, 74, 75, मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज 1658-1719, पृ0 39

[27] सुन्दरदास, सुन्दरग्रन्थावली, भाग-2, पृ0 733, बिहारी, बिहारीरत्नाकर, दोहा, 205, पृ0 87